दीनदयाल जी का व्यक्तित्व क्रमशःपूर्णत्व की ओर बढ़ता रहा। एक साधारण पंडित परिवार का सदस्य प्रचण्ड प्रतिभा का धनी, निराभिमानी, निश्ठावान स्वयंसेवक, लेखक, पत्रकार और राजनीति में नए प्रतिमान स्थापित करने वाला बन चुका था। किन्तु कुछ हिंसक आंखों को यह दृश्य न भाया। पंडित जी मात्र 51 वर्श के थे जब 10 फरवरी 1968 का वह दुर्भाग्यपूर्ण दिन आया। उन्हें लखनऊ के लिए ट्रेन पकडनी थी। स्टेशन पर विदाई देने कार्यकर्ताओं की भीड़ थी।

निकले हैं
कहां जाने के लिए,
पहुंचेंगे कहां मालूम नहीं।
राहों में भटकते कदमों को,
मंजिलों का निशां
मालूम नहीं।

''पीताम्बर जी
आप बहुत बढ़िया शेर
सुनाते हैं, नहीं सुनायेंगे
क्या?''

वाह, वाह।
लो गार्ड ने सीटी
भी दे दी।

यह दुर्भाग्यपूर्ण सफर उनका अन्तिम सफर साबित हुआ। इसी सफर में उनकी हत्या कर दी गयी।

एक पुरानी कहावत है, ''जिन्हें देवता प्रेम करते हैं, वे कम उम्र में स्वर्ग सिधारते हैं।''
पंडित जी का जीवन एक समर्पित जीवन था। शरीर का कण–कण और जीवन का क्षण–क्षण उन्होंने राश्ट्रदेव के चरणों में चढ़ा दिया। सम्पूर्ण देश उनका घर व सारा समाज उनका परिवार था। उनकी ऑखों में एक ही सपना था– भारत को समृद्धिशील, आधुनिक राश्ट्र बनाना।

समाप्त।